# ग्राम गौरव संस्थान

ग्राम –बिरहटी, सुक्कपुरा जिला करौली (राज.)

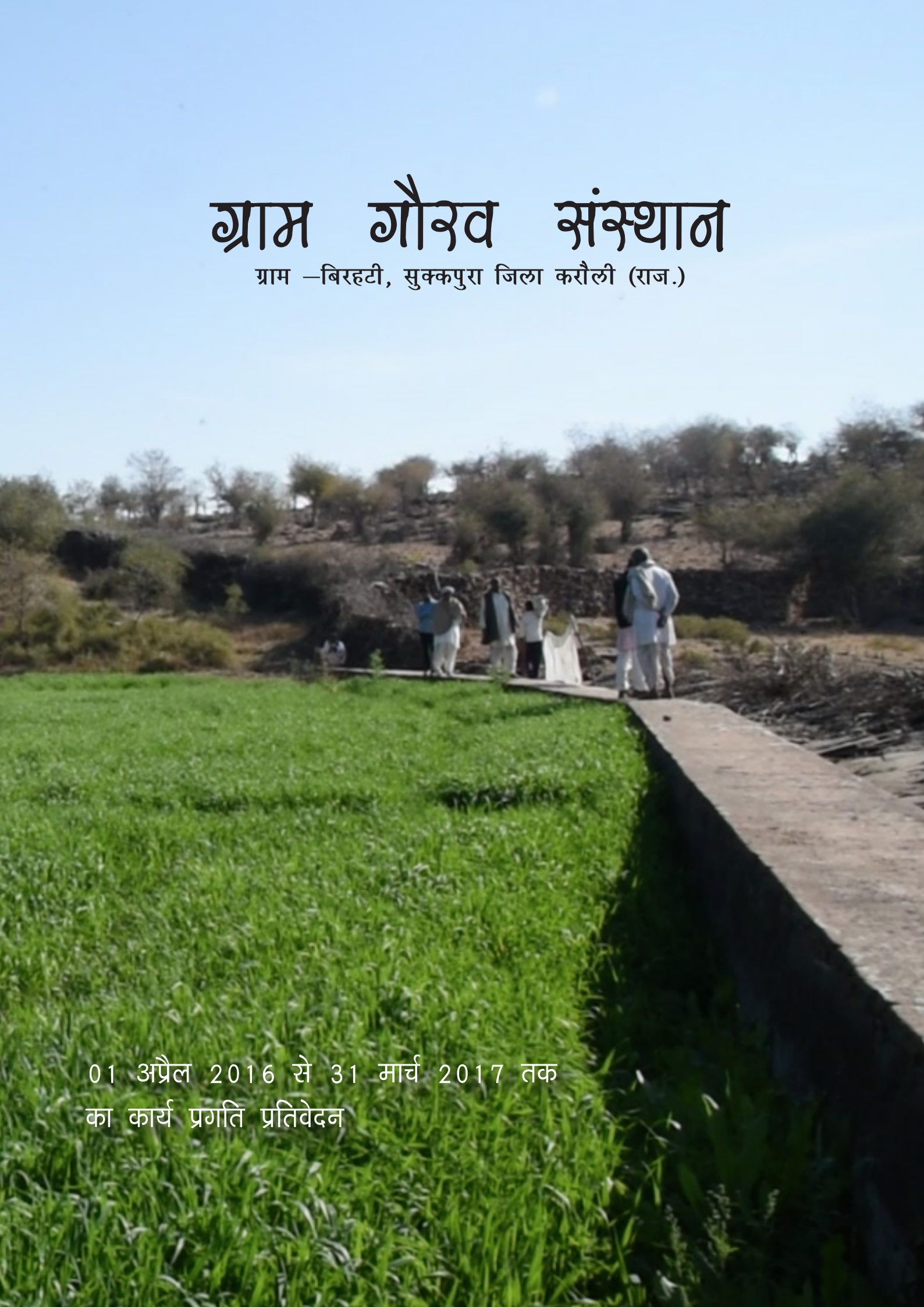

01 अप्रैल 2016 से 31 मार्च 2017 तक
का कार्य प्रगति प्रतिवेदन

ग्राम गौरव संस्थान द्वारा समुदाय आधारित सुदृढ आजिविका प्रबंधन पर डांग क्षेत्र में राजीव गांधी फाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से काम किया जा रहा है। डांग क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियो के अनुसार यहा के विकास की सोच के प्रारंभ में वर्षा जल को सहेजकर व मृदा संरक्षण करके ही संभव है। ताल, पोखर, पैग. ारा निर्माण का कार्य संस्थान द्वारा पिछले लंबे अर्से से किया जा रहा है। परिणामस्वरूप बंजर व पथरीली जमीन द्विफसलीय तैयार हुई है, जिससे डांग वासियो की खाद्य सुरक्षा मजबूत हुई है साथ ही ऐसे काम करने हेतु डांग वासियो में चेतना आई है । इस कार्य को व्यापक और गहरा करने के लिए संस्था द्वारा ग्राम पंचायतो को मिलने वाले राजकीय धन की मदद से करने हेतु समुदाय की सहभागिता से कार्य किया जा रहा है। ग्राम पंचायत जनप्रतिनिधियो सहित राजस्थान सरकार के मानस पटल पर बिठाने हेतु संस्थान प्रयासरत् है एवं पिछले 01 अप्रैल 2016 से 31 मार्च 2017 तक कि गई गतिविधि निम्नवत् रही जो इस प्रकार है।

## गतिविधियां

1. ग्राम संगठन व ग्राम विकास समितियों का पुर्नगठन – जलसभा व जलसमिति जैसे ग्रामीण स्तर पर संस्थान द्वारा गठित जनतांत्रिक संगठनों के व्याख्या में सर्वांगिण विकास की व्यापकता को बढाने के लिए जल सभा की जगह ग्राम संगठन व जलसमिति की जगह ग्राम विकास समिति का गठन करने के एक निर्णय के अनुसार कार्यरत् गांवों में नुक्कड सभाओं के माध्यम से ग्राम वासियों में जलसमिति व जल सभा कि सीमितता को विस्तृत व सम्पूर्ण ग्राम विकास हेतु ग्राम संगठन व ग्राम विकास समिति का पुर्नगठन 21 गांवो में किया गया।

2. डोर टू डोर सर्वे – संस्थान द्वारा उपरोक्त 21 गांव में हर परिवार का (चुल्हा आधारित) भौगोलिक (जमीनी) आर्थिक शैक्षणिक, सामाजिक डोर टू डोर सर्वे कर कृषि, पशुधन, पलायन, मजदूरी, व पारिवारिक स्थिति की जानकारी एकत्रित की गई ।

3. ग्रामीण सहभागी समीक्षा (पी.आर.ए.) कर सुक्ष्म योजना को ग्राम पंचायत बोर्ड के प्रस्ताव में दर्ज करवाया – गठित ग्राम संगठन व ग्राम विकास समिति की बैठको में ग्रामीण सहभागिता के सहयोग से पर वर्षा जल व मृदा संरक्षण के साथ–साथ अन्य उपेक्षित विकास की योजनाओं के लिए ग्राम संगठन के साथ ग्रामिण सहभागी समिक्षा की गई जिसमें निकलकर आयी गांव की समस्याओ को सूचीबध्द करके यह कार्य 21 गांव में किया गया ।

4. ग्राम पंचायत बोर्ड के साथ पुनः सम्पर्क व बैठक – कार्यरत् क्षेत्र के गांवो के ग्राम पंचायतों की योजनाओं

पोखर

की प्रति लेकर ग्राम संगठनों के समक्ष पेश कर संवाद करवाकर ग्राम संगठन स्तर पर गांव में उभरी विकास की योजनाओं को सूचीबध्द करते हुए प्राथमिकता के आधार पर ग्राम पंचायत कार्यालय में वार्ड मेम्बर के माध्यम से यह कार्य 10 ग्राम पंचायतों में प्रेषित किया ।

5. डांग क्षेत्र के 21 गांवो की योजना बनाकर सरकार को जिलाधीश महोद्य के माध्यम से प्रेषित किया गया – विस्तृत सर्वे करके व ग्रामीण सहभागिता के माध्यम से गांव में कुपोषण, बेराजगारी, पलायन, आदि से मुक्ति पाने के लिए पौराणिक विधियो को संस्मरण में लाकर वर्षा जल व मृदा संरक्षण के कार्यो के निर्माण वास्ते जिलाधीश महोद्य को योजना प्रेषित की गई ।

पैगारा

6. संस्थान व समाज की सहभागिता से जल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ का निर्माण – संस्थान द्वारा कार्य क्षेत्र में जल एवं मृदा सरक्षण संरचना तीन तरह की बनाई जाती है ।

1. पोखर – पोखर नाले के उपरी हिस्से में बनाई जाती है जिससे की हितग्राही समूह की जमीन में सिचाई के लिए पानी एकत्रित किया जाता है। सहज रूप से नाले में मिट्टी उपलब्ध नही होने पर व एक छत पत्थर होने पर सीमेट कांक्रीट से एनिकट बनाकर वर्षा जल संचय किया जाता है जो पोखर का काम करता है पोखर सामुदायिक होती है ।

ताल

2. पैगारा – पैगारा का मुख्य उद्देश्य वर्षा जल के साथ बहकर जाने वाली मिट्टी को रोकना व जमीन में नमी लाना होना है जो तेज बरसात के बहाव से मिट्टी बहकर जाती है उसको सीमेन्ट व क्राकींट की दिवार बनाकर रोकते है जिससे बंजर व पथरीली जमीन द्विफसलीय तैयार होती है ।

3. धर्मताल – गांव के आसपास नाले पर बरसाती जल

को पेयजल हेतु उपयोग में लेने के लिए धर्मताल तैयार किया जाता है जो गांव की आबादी के अनुरूप होता है इससे कृषि सिचाई हेतु सीधा पानी नही लिया जाता झराव के पानी को उनके नीचे आने वाली जमीन से संबंधित किसान काम में ले सकता है।

4. अडवाट – कम ढलान वाली जमीन में कच्चे पत्थरों द्वारा बरसात में बहकर जाने वाली मिट्टी को रोकने के लिए अवरोधन बनाये जाते है जो कि कम लागत में अधिक लाभ ले सकते है इसको स्थानिय भाषा में अडवाट कहा जाता है।

ग्राम गौरव संस्थान ने राजीव गांधी फाउण्डेशन व ग्रामीण हितग्राहियो के आर्थिक सहयोग व ग्राम संगठनों की तकनीकि व भागीदारी को साझा करते हुए निर्माण कार्य किया गया । गठित कर्त्ता टीम द्वारा पिछले 17 वर्षो से 72 गांव में कार्य किया गया। सन् 2016 में ग्राम गौरव संस्थान के कार्यकर्त्ता एवं प्रकृति फाउण्डेशन के प्रतिनिधि श्री राजेन्द्र जयसवाल जी, नाबार्ड के पूर्व अध्यक्ष श्री थोरट जी एवं राजीव गांधी फाउण्डेशन के प्रतिनिधियो के साथ एक संयुक्त कार्यशाला की गई जिसमें तय किया गया कि इन 72 गांव में से हमकों नालो के अनुसार गांव को सूचीबध्द करके काम करना चाहिए इस संवाद में हमारे कार्य क्षेत्र के 72 गांव में से 05 नालो के रीज पर 45 गांवो को हमने 03 प्रकार से विभाजित किया जिसमें 1. बफर गांव, 2. कोर गांव, 3. परिधि में आने वाले गांव ।

बफर गांव – संस्थान द्वारा 21 गांव मे से 11 गांव को बफर गांव मानकर योजना प्रेषित की साथ में संस्थान द्वारा किये गये पूर्व के 04 गांव और में भी समाज में चेतना लाकर ग्राम पंचायत व वनविभाग एवं स्वयं हितग्राहियो के माध्यम से वर्षाजल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ का निर्माण करवाया गया व कार्य निर्माणाधीण है जो कुल 15 गांव हुए इस कार्य में संस्थान के कार्यकत्ताओ ने पूर्व में किये गये कार्यो से अर्जित लाभ का उदाहरण देते हुए इस कार्य को किया ।

| क्र | गांव का नाम | ग्राम पंचायत | पंचायत समिति | ताल | पोखर | पैगारा | एनिकट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01 | चौडियाखाता | दौलतपुरा | सपोटरा | 0 | 02 | 0 | 0 |
| 02 | श्रावतपुरा | दौलतपुरा | सपोटरा | 0 | 02 | 0 | 0 |
| 03 | बहरदा | दौलतपुरा | सपोटरा | 0 | 03 | 0 | 0 |
| 04 | दौलतियाकी | कैलादेवी | करौली | 0 | 02 | 0 | 01 |
| 05 | नरेकी | कैलादेवी | करौली | 0 | 01 | 03 | 0 |
| 06 | बरकी | कैलादेवी | करौली | 0 | 01 | 02 | 0 |
| 07 | थ्बरमका | निभैरा | सपोटरा | 01 | 02 | 0 | 0 |
| 08 | अलबतकी | राहिर | मण्डरायल | 0 | 01 | 02 | 0 |
| 09 | कसियापुरा | लंगरा | मण्डरायल | 0 | 01 | 0 | 0 |
| 10 | श्यामपुर | निंदर | मण्डरायल | 0 | 01 | 16 | 0 |
| 11 | राहिर | राहिर | मण्डरायल | 0 | 02 | 0 | 0 |
| 12 | रायबेली (दौलतपुरा) | बादलपुर | मण्डरायल | 0 | 01 | 0 | 0 |
| | | कुल संरचनाए (44) | | 1 | 19 | 23 | 1 |

संस्थान् के प्रयासो द्वारा समाज में चेतना लाकर सरकार के विभिन्न योजनाओ के अन्तर्गत उपरोक्त संरचनाओ के निर्माण में अनुमानित स्विकृत बजट एक पैगारा का औसतन् दो लाख पचास हजार रू, एक पोखर पर तीन लाख रू, व एक ताल पर पांच लाख रू होता है । इस प्रकार इस वित्तीय वर्ष में लगभग 1.31.00.000/– रू का कार्य संस्थान व समाज के प्रयासों के द्वारा किया गया ।

कोर गांव – संस्थान द्वारा 21 गांव में से 10 गांव को कोर गांव माना जिन गांव में संगठन की मजबूती संस्थ. ान की पकड़ व किये जाने वाले कार्यो से त्वरीत लाभ कि संभावनाओ को देखते हुए इन गांव में राजीव गांधी फाउण्डेशन व समाज के आर्थिक सहयोग से कार्य करना तय किया गया । जो निम्नवत् है ।

| क्र | संरचना का नाम | प्रकार | गांव का नाम | संस्थागत खर्च | जनसहयोग | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पोखर | | | | | | |
| 01 | आम वाली पोखर | पोखर | तीन पोखर | 68211 | 33855 | 102066 |
| 02 | कोलू वाली पोखर | पोखर | तीन पोखर | 97992 | 48746 | 146738 |
| 03 | फूटी पोखर | पोखर | तीन पोखर | 69833 | 34667 | 104500 |
| 04 | मदन मोहन वाली पोखर | पोखर | राहिर (घेरकापुरा) | 94029 | 64314 | 158343 |
| 05 | मन्नी वाली पोखर | पोखर | राहिर (घेरकापुरा) | 84243 | 44321 | 128564 |
| 06 | पटार वाली पोखर | पोखर | राजपुर | 71270 | 35666 | 106936 |
| 07 | सुमेरा का एनिकट | एनिकट | बरकी | 195200 | 210158 | 405358 |
| 08 | टेटू क्रिया की पोखर | पोखर | तीन पोखर | 60500 | 30000 | 90500 |
| 09 | झिलन के घेर की पोखर | पोखर | कूलराकी | 35179 | 17939 | 53118 |
| 10 | बहारी की पोखर | पोखर | राजपूर (कोट) | 189914 | 94707 | 284621 |
| 11 | धौका साटा की पोखर | पोखर | तीन पोखर | 58277 | 26888 | 85165 |
| 12 | गंभीरी वाली पोखर | पोखर | तीन पोखर | 70012 | 34755 | 104767 |
| पैगारा | | | | | | |
| 01 | आम वाले खेत का पैगारा | पैगारा | बरकी | 50130 | 52800 | 102930 |
| 02 | बहरे वाला खेत का पैगारा | पैगारा | अंगदकापुरा | 70500 | 75600 | 146100 |
| 03 | बंजारे कि क्रिया वाले खेत | पैगारा | कुरलाकी | 19397 | 23500 | 42897 |
| 04 | बंजारी खेत का पैगारा | पैगारा | कशियापुरा | 58400 | 52650 | 111050 |
| 05 | बरे की पटार वाली खेत | पैगारा | कशियापुरा | 80900 | 83750 | 164650 |
| 06 | बरी के खेत का पैगारा | पैगारा | कशियापुरा | 114500 | 107250 | 221750 |
| 07 | भकूला वाला पैगारा | पैगारा | बामूदा | 40784 | 43800 | 84584 |
| 08 | छाजे वाले खेत का पैगारा | पैगारा | कशियापुरा | 80300 | 81850 | 162150 |
| 09 | छाजे वाली घेर की क्रिया | पैगारा | नरेकी | 21123 | 22600 | 43723 |
| 10 | छाजे वाली नीचली क्रिया | पैगारा | नरेकी | 14240 | 16700 | 30940 |
| 11 | धो वाले खेत का पैगारा | पैगारा | बामूदा | 33265 | 33600 | 66865 |
| 12 | हटिला वाले खेत का पैगारा | पैगारा | बामूदा | 84285 | 74600 | 158885 |

| क्र | संरचना का नाम | प्रकार | गांव का नाम | संस्थागत खर्च | जनसहयोग | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | जामून के डबरा वाला पैगारा | पैगारा | तीन पोखर | 93000 | 93800 | 186800 |
| 14 | कंजर वाली घेर की निचलीस्वर | पैगारा | दौलतीयाकी | 28980 | 27000 | 55980 |
| 15 | कटान के घेर का पैगारा | पैगारा | दौलतीयाकी | 38824 | 38300 | 77124 |
| 16 | खोरन की घेर का (झिरन्या) | पैगारा | मानीकपुरा | 55802 | 49400 | 105202 |
| 17 | सहेजना वाला खेत का(रून्दका) | पैगारा | मानीकपुरा | 55199 | 46200 | 101399 |
| 18 | समई वाला खेत का पैगारा | पैगारा | कशियापुरा | 92850 | 99000 | 191850 |
| 19 | सोलू वाले खेत का पैगारा | पैगारा | बरकी | 70566 | 34600 | 105166 |
| 20 | तिल्ली वाले खेत का पैगारा | पैगारा | कशियापुरा | 106250 | 100000 | 206250 |
| अटवाड | | | | | | |
| 01 | बंजारे कि क्रिया वाले खेत | अटवाड | कुरलाकी | 1600 | 1600 | 3200 |
| 02 | भकूला वाला पैगारा | अटवाड | बामूदा | 6000 | 7300 | 13300 |
| 03 | छाजे वाली नीचली क्रिया | अटवाड | नरेकी | 3600 | 6000 | 9600 |
| 04 | धो वाले खेत का पैगारा | अटवाड | बामूदा | 6800 | 18200 | 25000 |
| 05 | कंजर वाली घेर की निचलीस्वर | अटवाड | दौलतीयाकी | 3200 | 7000 | 10200 |
| 06 | कटान के घेर का पैगारा | अटवाड | दौलतीयाकी | 8000 | 16100 | 24100 |
| 07 | खोरन की घेर का (झिरन्या) | अटवाड | मानीकपुरा | 10000 | 15300 | 25300 |
| 08 | मन्नी वाली पोखर | अटवाड | राहिर (घेरकापुरा) | 7600 | 9100 | 16700 |
| 09 | सहेजना वाला खेत (रून्दका) | अटवाड | मानीकपुरा | 7200 | 7600 | 14800 |
| 10 | सोलू वाले खेत का पैगारा | अटवाड | बरकी | 5600 | 32200 | 37800 |
| 11 | सुमेरा का एनिकट | अटवाड | बरकी | 8000 | 9100 | 17100 |

परिधि में आने वाले गांव – संस्थान द्वारा 21 गांव के साथ अतिरिक्त 3 गांव को परिधि में आने वाले गांव मानकर कार्य किया गया। यहां गांववासी संस्थान कार्यकर्ताओं के चेतनाणत्मक कार्य से प्रभावित होकर इस जल संवर्द्धन के कार्य को आगे बढ़ाने में लगे हैं।

| क्र | गांव का नाम | ग्राम पंचायत | पंचायत समिति | ताल | पोखर | पैगारा | एनिकट |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 01 | मोरोची | दौलतपुरा | सपोटरा | 01 | 01 | 0 | 0 |
| 02 | पातीपुरा | दौलतपुरा | सपोटरा | 01 | 01 | 0 | 0 |
| 03 | चौडक्या | दौलतपुरा | सपोटरा | 0 | 02 | 0 | 0 |
| | | कुल संरचनाए (06) | | 2 | 4 | 0 | 0 |

उपरोक्त जल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ से समाज को होने वाले लाभ निम्न होगे –

1. पैगारा निर्माण मे पिछले अनुभव के अनुसार एक पैगारे से लगभग 03 बीघा जमीन नई कृषि योग्य बनकर तैयार होती है । उपरोक्त 20 पैगारो से 60 बीघा जमीन तैयार होगी ।
2. एक पोखर निर्माण से लगभग 10 बीघा जमीन सिंचित होती है 12 पोखरो से 120 बीघा जमीन द्विफसलीय सिंचीत होगी ।
3 अडवाट में कच्चे पत्थरों द्वारा बहकर जाने वाली मिट्टी को रोका जाता है संस्थान द्वारा 20 बीघा जमीन में अडवाट कार्य किया है। जिससे 20 बीघा जमीन की मिट्टी रूकेगी ।

महिला स्वयं सहायता समूह का गठन एवं संचालन – ग्राम गौरव संस्थान ने अपने कार्य क्षेत्र के गांव में महिलाओं को डांग क्षेत्र की सुदृढ आजिविका निर्माण में साझा करने के लिए महिला संगठन कार्य भी सरचनात्मक कार्यो के साथ संचालित किया है महिला समूह गठित करके बचत करना उनका आपस में ही लेनदेन करवाना। महिला समूह से ही प्राकृतिक संसाधन (वर्षा जल, मृदा सं. रक्षण, पशुपालन, कृषि) पर चर्चा करना और उनके निर्माण व मरम्मत करने के लिए सोच में बदलाव लाना व अच्छे नस्ल के पशुपालन पर चर्चा करके जागृति लायी जा रही है । साथ ही देशी खाद व देशी बीज का प्रयोग किया गया है इससे स्वास्थ्य पर पड़ने वाला कुप्रभाव को कम किया जा सके । और कुपोषण में कमी आ सके विगत वर्षो में बहुत से महिला समूह का गठन किया गया । महिलाओं में अपने डांग के सर्वांगिण विकास की समझ भी विकसीत हुई है जिसका परिणाम स्वरूप महिलाए अपने गांव की ताल, पोखर, पैगारों के निर्माण में सहयोग वास्ते ग्राम पंचायत बोर्डो में पहुची है वर्ष 2016-17 में महिलाओं को अपने गांव के सर्वांगिण विकास में साझा करने के लिए उनके समय-समय पर बैठके की है। जो सुचारू रूप से चल रहे है । जो महिला समूह निम्न प्रकार से कल्स्टर वार बचत पूंजी एकत्रित है।

| क्र | कल्स्टर का नाम | कुल समूह संख्या | कुल सदस्य | कुल बचत |
|---|---|---|---|---|
| 01 | गजसिंहपुरा | 12 | 120 | 213605 |
| 02 | खिजूरा | 05 | 50 | 21244 |
| 03 | श्यामपुर | 16 | 176 | 369600 |
| | | 33 | 346 | 604449 |

ग्राम गौरव संस्थान कार्यकत्ताओ का क्षमता वर्धन हेतु भ्रमण –

ग्राम गौरव संस्थान वर्तमान कार्यकारणी व मार्गदर्शक व संरक्षक उपरोक्त जल एवं मृदा संरक्षण संरचनाओ के कार्य को व्यापक व आगे बढाने के लिए भारत सरकार व राज्य सरकार की परियोजना के साथ समाज को जोडकर इन संरचनाओ का सतत् निर्माण प्रक्रिया को बढ़ाने का मानस बनाकर भारत सरकार की नरेगा, नाबार्ड व ग्रामीण विकास विभाग के साथ मिलकर राजस्थान व अन्य प्रदेश में स्वैच्छिक संस्थाए काम कर रही है उनके अनुभवो व परिणामों को देखने समझने के लिए स्वयं अपने कार्य कर्त्ताओं की कौशलता को बढ़ाने के लिए भीलवाड़ा जिले में कार्यरत FES व प्रकृति फाउण्डेशन जालोद गुजरात में दिनांक 20.08.2016 से 24.08.2016 तक भ्रमण किया गया। इस भ्रमण में कार्यकत्ताओं को समाज उत्थान हेतु नया सिखने को मिला जो निम्न प्रकार है –

– FES द्वारा सरकार के साथ मिलकर ग्राम इटावा तहसील कोटडी जिला भीलवाडा में चारागाह विकास देखा जिसमें नाली बनाकर पौधारोपण का कार्य नरेगा जैसी परियोजना द्वारा हुआ बताया गया जिससे अनुभव किया।

1. प्रथम यहा डांग से भौगोलिक परिस्थितिया अलग है पर चारागाह विकास कि महती आवश्यकता भी है जो वहा के लिए उपयुक्त है नरेगा जैसी योजनाओं से समाज के विकास कार्य हुए है।

– चारागाह का रखरखाव व उत्पादन का बटवारा गांव की गठित ग्राम विकास मंडल द्वारा सुनिश्चित किया जाता

है ।

- लोगो से रूबरू होने व उनके अनुभव को कार्यशैली को जानकर महसूस किया गया कि हर कार्यकारी एजेन्सी को नितिवान् पारदर्शी वतनप्रेमी होना अनिवार्य है ।
- वनभूमि को चारागाह व कृषि की भूमी में कैसे रूपान्तरीत होती है ।
- निजी भूमी सूधार हेतु नरेगा जैसी योजनाओ से निधि लेकर किसान अपनी कृषि को बढ़ावा दे सकता है।
- प्रकृति फाउण्डेशन कार्य को देखकर समझ में आया कि छोटी छोटी संरचनाओ का निर्माण करके खेती कि जा सकती है एवं निम्न निर्णय लिये गये जो हम हमारे कार्यक्षेत्र में संचालित करने का प्रयास कर रहे है।

1. छोटे-छोटे नालों पर जलसरक्षण संरचनाओ का निर्माण करना ।
2. जलागम क्षेत्र का नजरीया नक्शा बनाकर जल संरक्षण संरचनाओ का दर्शाना ।
3. जल संरक्षण कार्यो के साथ साथ गांव की हर समस्या को लेकर चले जिससे सरकार की कार्यप्रणाली से अवगत हो सके ।
4. कार्य की सफलता वास्ते समय का पाबंद, नितिवान्, कार्य के प्रति समर्पण, समाज में पारदर्शिता रखना जैसे गुणो का होना आवश्यक है ।
5. स्वैच्छिक कार्यकत्ताओ का चयन गांव में गठित ग्राम संगठन व गाम विकास समिति द्वारा करवाना ।
6. समूचित जल व मृदा संरक्षण कार्य को करने की धारणा बनाना ।

उपरोक्त भ्रमण से निकलकर आये अनुभव को संस्थान ने अपने कार्यक्षेत्र में ग्रामीण सहभागी समीक्षा डोर टू डोर सर्वे व नालो पर छोटे-छोटे कार्य करने की योजना बनाई है जो समूचित क्षेत्र को लाभान्वित करेगी ।

उपरोक्त कार्य के साथ-साथ कार्यकर्त्ताओ द्वारा कार्यक्षेत्र में समाज के साथ विधवा पेंशन, पशुबीमा, फसल बीमा व पशु बीमारियो में समाज का सहयोग करते है इसके साथ में डांग क्षेत्र में जो कि एक विशेष क्षेत्र है (धौलपुर क्षेत्र की बाडी व बसेडी की डांग के युवा रोजगार के अभाव में पशुधन की चोरी करने लगे है इनका मानसपटल बदलकर संस्था कार्यकर्त्ताओ द्वारा समाज की धारा से जोडने का कार्य किया ।